''और तक़्वे का पहनावा ही अच्छा भला है।''

(सूर–ए–आराफ़)

घर और समाज में ख़ुदा का डर (तक़्वा)

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

तक़्वे की वसीयत

तक़्वे के दो ऊँचे दर्जों ख़ास व ख़ासमख़ास तक़्वे को अपनाना हर एक के बस में नहीं है। इसलिए आम औरत मर्द को तक़्वे के इन दो दर्जों की नसीहत न करना चाहिए। ये दोनों दर्जे नबियों, इमामों और औलिया बड़े अल्लाह वालों से ख़ास है लेकिन हर औरत मर्द आम तक़्वे से संवर सकता है। यानी वह हराम काम, हराम भावनाओं ख़्वाहिशों और हराम ख़र्चे से बच सकता है। इसलिए आम लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वे नर्म और मीठी बोली, अच्छे चाल–चलन के साथ नर्म बोली में एक–दूसरे को तक़्वे की नसीहत करें, एक–दूसरे को हराम से रोकें जिससे पूरी ज़िन्दगी तक़्वे के रूहानी साए में बीत जाए और हरेक ख़ासकर घर और समाज तक़्वे से फ़ायदा उठा सके।

आम लोगों का ख़ासकर बियाहे जोड़ों को तक़्वे से संवरना ज़रूरी है और इसे बच्चों के मन में बिठाना ख़ुदा वाली ज़िम्मेदारी है। सच्चाई से लगाव रखने वाले हक़ वाले कहते हैं : ''बच्चा ख़ुदा की अमानत है, उसका मन और रूह साफ़ सुथरा है, हर तरह की खिचावट छाप से ख़ाली है। इस साफ़ सादे पन्ने पर किसी तरह की छाप उभारी जा सकती है। उसमें हर छाप ले सकता है। अगर वह नेक और भली आदतों वाले घर में पलता है, उस पर सत्य की पढ़ाई के दरवाज़े खोले जाएँगे तो बच्चा दुनिया व आख़िरत की भलाई और नेकियों को समेट लेगा। उस तक 'सत्य' पहुँचने की वजह माँ–बाप होते हैं, इसलिए सवाब में वे भी साझीदार हैं। और उस बच्चे को तमीज़ तहज़ीब सिखाने वाले टीचर वग़ैरा भी सवाब में साझीदार हैं।

अगर गन्दगी के और तक़्वे से अलग होने के नतीजे में बच्चे के दिल–दिमाग़ पर शैतानी छाप उभारें और उनके साथ रहने की वजह से बच्चा चाल–चलन की गिरावटों और बुराइयों में पड़ जाए और जानवरों की तरह सिर्फ़ अपने पेट के बारे में सोचे और क़िस्मत के बिगाड़, निकम्मेपन और मरन के छोर पर पहुँच जाए तो उसके ज़िम्मेदार भी उसके माँ–बाप और टीचर ही होंगे।

''अपने ख़ुद को और अपने वालों को (जहन्नम की) आग से बचाव''

जिस तरह माँ–बाप बच्चे को तन्दूर या मिट्टी में गिरने या आग की लपटों को छूने से बचाते हैं, उसे ख़तरनाक चीज़ के पास जाने से

रोकते हैं, उसी तरह उन्हें क़यामत में अपने बच्चे को ख़ुदा के ग़ज़ब (प्रकोप) की आग में जलने से बचाना चाहिए। क़यामत के दिन अपने बच्चे को अज़ाब से बचाए रखने का तरीक़ा माँ–बाप का तक़्वे वाला होना है और दूसरा तरीक़ा बच्चे के मन में तक़्वा बिठाना है। बच्चे के पलने बढ़ने के सिलसिले में माँ–बाप को मेहरबान, सिखाने वाले, अच्छी नसीहत करने वाले, हमदर्द (सौहार्दय–पूर्ण) और नेकी बताने वाला होना चाहिए।

उन्हें चाहिए कि वे ख़ुद तक़्वा, ईमान और अच्छे कामों से संवारें। उसके बाद बच्चे को तहज़ीब तमीज़ सिखाने अच्छे चलन का सबक़ दें, बुरे दोस्त और बदमिज़ाज टीचर के पास न जाने दें। उन्हें इसकी भी कोशिश करना चाहिए कि हद से ज़्यादा बनाव–सिंगार, फैशन, फ़ज़ूलख़र्ची और माल पैसे का प्यार बच्चे के दिल में न बैठने पाए जिससे आगे चलकर वह फ़ज़ूल ख़र्च, लालची और सरफिरा न होने दें। अगर समाज की इमारतें कच्चे मसाले से बनायी जाएंगी तो वह बिल्डिंग अपने रहने वालों समेते बैठ जाएगी। इस तरह ऐसे समाज में जीना मुश्किल हो जाएगा।

अगर हर घर तक़्वे की नींव पर खड़ा होगा, अगर मियाँ–बीवी तक़्वे वाले होंगे, अगर माँ–बाप ने बच्चे के अन्दर तक़्वा बिठा दिया होगा, तो समाज को पुलिस, अदालतों और जेलों की ज़रूरत न होगी, न आएगी। फिर ऐसा देश, ऐसा समाज एक भारी खर्चे से बच जाएगा। आम लोगों की भलाई चोर–बदमाशों से बचाव में पैसा लगाने से बचा पैसा आम लोगों की भलाई के कामों, जन–कल्याण (Social Welfare) में लगाया जा सकता है।

(जारी)